Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)
Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

डॉ॰ अम्बेडकर के विचारों का भारतीय राजनीति पर प्रभाव

डॉ जगदीप सिंह

उन्नीसवीं शताब्दी भारत में सामाजिक एवं धार्मिक जागृति की शताब्दी कही जाती है। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में भारत में सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक जागृति पैदा हुई, जिसका परिणाम भारत की स्वतन्त्रता के रुप में प्रकट हुआ। भारत की स्वतंत्रता के रूप का कारण राष्ट्रीय आन्दोलन था, जिसमें भारत के सभी वर्गों, धर्मों, जातियों एवं सम्प्रदायों के लोग शामिल थे। कांग्रेस के तिरंगे के नीचे खड़े होकर सभी 'वन्देमातरम' 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' और 'विजयी' विश्व तिरंगा प्यारा' गाया करते थे। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन वस्तुतः राष्ट्रीय एकता का द्योतक था।

मैकडोनाल्ड के शब्दों में "भारतीय राष्ट्रवाद राजनीतिक मण्डलों का आन्दोलन नहीं अपितु इसंसे भी अधिक कुछ रहा है। यह एक ऐतिहासिक परम्परा का पुनर्जीवन है, एक राष्ट्र की आत्मा की मुक्ति है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के कर्णधारों में ए॰ओ॰ ह्यम, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, बदरूद्दीन तैयब, फिरोजशाह मेहता, दादा भाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, पं॰ जवाहरलाल नेहरु, सुभाष चन्द्र बोस, सरदार बल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर आदि प्रमुख हैं। इनके त्याग और बलिदान की कहानी भारतीय इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित है। डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर भारत के उन महापुरुषों में प्रतिष्ठित है, जिनका भारतीय राजनीति में योगदान उल्लेखनीय है।

डॉ॰ अम्बेडकर एक महान राष्ट्रवादी चिन्तक, विधिवेत्ता एवं समाज सुधार थे। उन्होंने सन्त रैदास, कबीर, ज्योतिबा राव फुले, शाह जी महाराज आदि की परम्पराओं का निर्वहन करते हुए अपनी जाति एवं समाज में जागृति हेतु आजीवन प्रयास किए। डॉ॰ अम्बेडकर ने हिन्दु कटटर पंथियों से निरंतर अपमानित होने के बावजूद हिन्दु धर्म पर सार्वजनिक रूप से कोई टीका टिप्पणी नहीं की। इस्लाम और सिख धर्मों के धनाढयों व शासकों के प्रलोभन से वे विचलित नहीं हुए और हिन्दु बने रहे। हालांकि अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में डॉ॰ अम्बेडकर ने हिन्दु धर्म से अलग होकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

एक दलित किन्तु होनहार एवं एक निर्धन किन्तु कुशाग्र बुद्धि अम्बेडकर ने बड़ी कठिनाइयों के साथ अमेरिका और इंग्लैंड के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों से एल॰एल–डी॰ जैसी महान उपाधियां प्राप्त की जो उस समय के किसी भी भारतीय को प्राप्त नहीं थी। उस योग्यता के बावजूद अछूत होने के कारण डॉ॰ अम्बेडकर को भारत में उचित सम्मान नहीं मिला।

जहाँ उन्होंने इंग्लैंड व अमेरिका जैसे समतावादी और मानवतावादी देशों से शिक्षा अर्जित

Assistant Professor, Deptt of Political science, Govt (P.G) College, Naraingarh

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

की, वहीं अपने देश व भारतीय समाज द्वारा निरन्तर तिरस्कार से खिन्न उन्होंने दलित समाज में जागृति पैदा करने के लिए सन 1920 में 'अन्त्यज संघ' की स्थापना की। उस समय अछूतों का सार्वजनिक स्थलों पर जाने, सार्वजनिक कुओं, तालाबों से पानी लेने और मन्दिरों में प्रवेश वर्जित था।

डॉ॰ अम्बेडकर ने दलितों में सामाजिक जागृति पैदा करने के लिए जनवरी सन 1930 में 'मूकनायक' नामक अखबार का सम्पादन किया। उन्होंने अप्रैल में 'बहिष्कृत भारत' 'समता' तथा 'जनता' का भी सम्पादन किया। उन्होंने अपने कई महत्वपूर्ण ग्रन्थों– जातिभेद का उच्छेद, 'अछूत कौन कैसे, 'शूद्रों की खोज' के द्वारा भारतीय जनता एवं बुद्धिजीवियों का ध्यानाकर्षण किया। उनकी योग्यता और सराहनीय सामाजिक सेवाओं के लिए उन्हें सन 1927 में बम्बई विधान परिषद का सदस्य मनोनीत किया गया। परिषद में रहकर डॉ॰ अम्बेडकर अछूतोद्धार के लिए गांव–गांव, नगर–नगर घूमकर लोगों से मिलकर और उनकी समस्याएं पूछकर उसका यथासम्भव निराकरण भी करते थे। वे कहते थे कि "आप अपनी दासता की श्रृंखलाएं खुद तोड़ो, अपमानित होकर जीवित रहना धिक्कार है।

उन्होंने लड़कों के साथ–साथ लड़कियों की शिक्षा पर विशेष बल दिया। वे कहा करते थे लड़को की अपेक्षा लड़कियों को शिक्षित करना जरूरी है, ताकि वे अपने परिवार को शिक्षित बना सकें।

मैकडोनाल्ड एवार्ड 1932 द्वारा ब्रिटिश सरकार ने हिन्दू जाति का विभाजन कर दिया और अछूतों के लिए सुविधाएँ प्रदान कर दी इससे हिन्दू जाति का विभाजन हो गया था। राष्ट्रीय आन्दोलन से जुड़े भारतीय नेता, विशेषकर महात्मा गांधी इस निर्णय से खिन्न थे। गांधी जी ने मैकडोनाल्ड एवार्ड 1932 के विरोध में 'यरवदा जेल' में आमरण अनशन कर दिया। वे अछूतों को हिन्दू धर्म से पृथक नहीं होने देना चाहते थे। आमरण अनशन के कारण गांधी जी की हालत दिन प्रतिदिन बिगड़ने लगी। अग्रणी भारतीय नेताओं–सर तेज बहादुर सप्र प॰ मदनमोहन मालवीय आदि के प्रयासों और डॉ॰ अम्बेडकर में उपजे उदात्व राष्ट्रीय प्रेम ने महात्मा गांधी को असमय मृत्यु और हिन्दू धर्म को विभाजन से बचा लिया।

सन 1937 के चुनाव में बाबा साहब अम्बेडकर बम्बई के लिए लेजिस्लेचर चुने गए और वे विधानसभा के लगभग 12 वर्षों तक विधायक रहे। उन्होंने अस्पृश्य समाज में जागृति हेतु पहाड़ सत्याग्रह और सन 1930 में नासिक के कालाराय मन्दिर में अछूतों के प्रवेश के लिए आन्दोलन चलाया।

'फूट डालो–शासन करो' की नीति के अन्तर्गत ब्रिटिश शासन ने डॉ॰ अम्बेडकर को जुलाई 1942 में भारत के गवर्नर जरनल की कार्यकारिणी का सदस्य नियुक्त किया। डॉ॰ अम्बेडकर ने गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में अपनी विद्वता और अपनी क्षमता का परिचय दिया, जिससे भारतीय नेताओं की आंखे खुली। अपनी पहली पत्नी रमाबाई के स्वर्गवास के लगभग 13 वर्षों बाद डॉ॰ अम्बेडकर ने डॉ॰ शारदा कबीर से विवाह किया, जो सविता अम्बेडकर के नाम से जानी जाती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रक्रिया के दौरान, सन 1946 में डॉ॰ अम्बेडकर 'संविधान निर्मात्री सभा' के सदस्य चुने गए। उनकी योग्यता और ज्ञान को देखते हुए

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

उन्हें सात सदस्यों य 'प्रारुप समिति' का सभापति चुना गया। डॉ॰ अम्बेडकर एवं सहयोगियों के परिश्रम से ही स्वतंत्रत भारत के संविधान का निर्माण सम्भव हो सका। उनके अथक प्रयासों और विद्वता के कारण ही उन्हें 'भारतीय संविधान का निर्माता' कहा जाता है।

अन्तरिम सरकार और भारत के प्रथम मंत्रीमण्डल में डॉ॰ अम्बेडकर को विधि मंत्रालय का जटिल और गुखतर दायित्व सौंपा गया। सितम्बर 1957 में मतभेद के कारण उन्होंने विधि मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया।

सन् 1949 में उन्होंने काठमाण्डू में मार्क्सवाद और बौद्ध धर्म पर चर्चा के सम्बन्ध में आयोजित विश्व बौद्ध सम्मेलन में भाषण किया। जुलाई सन 1951 में उन्होंने 'भारतीय बुद्ध जनसंघ' की स्थापना की और सितम्बर सन 1951 में बौद्धों की प्रार्थना पत्र पुस्तक 'बुद्ध उपासना पथ' का संकलन किया।

सन 1954 में रंगून में आयोजित विश्व बौद्ध सम्मेलन में डॉ॰ अम्बेडकर ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने मई सन 1955 में भारतीय बौद्ध महात्मा की स्थापना की। हिन्दू धर्म से निरन्तर तिरस्कृत होकर अन्ततः उन्होंने 14 अक्तूबर 1956 को बौद्ध धर्म अपना लिया। नवम्बर सन 1956 में डॉ॰ अम्बेडकर को काठमाण्डू (नेपाल) में 'नवबुद्ध' की उपाधि से विभूषित किया गया।

डॉ॰ अम्बेडकर एक महान विचारक थे। उनके विचारों में राष्ट्रवाद , प्रजातंत्र, सामाजिक न्याय आदि के तत्व पाए जाते हैं। उन्होंने भारतीय समाज की जातीय एवं साम्प्रदायिक समस्या पर गहन और मौलिक चिन्तन किया। उन्होंने दलितों के उत्थान के लिए निरन्तर संघर्ष किया। इसके बावजूद उनके सम्बन्ध में अनेक भ्रान्तियां फैली हुई हैं। लोग उन्हें 'दलितों का मसीहा' कहकर दलितों का नेता मानते हैं। उन्होंने सार्वजनिक रूपसे किसी जाति या वर्ण को कभी गाली नहीं दी और न ही उसे अपमानित किया।

मैकडोनाल्ड एवार्ड 1932 डॉ॰ अम्बेडकर के राजनीतिक जीवन की महान उपलब्धि थी, किन्तु उन्होंने महात्मा गांधी के जीवन और हिन्दू जाति में रहते हुए निरन्तर अपमानित और तिरस्कृत होते हुए भी उन्होंने हिन्दू बने रहना उचित समझा। हैदराबाद के नवाब और सिक्ख महाराज रणजीत सिंह जी द्वारा निरन्तर पद और पैसे का प्रलोभन मिलने के बावजूद डॉ॰ अम्बेडकर न तो मुसलमान बने और न ही सिख। यह डॉ॰ अम्बेडकर की राष्ट्रभक्ति और महानता का द्योतक है। हाल के वर्षों में कुछ राजनीतिक दल और उनके नेता डॉ॰ अम्बेडकर को अछूतों के नेता अथवा दलितों का मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित करने और दलित वोट बैंक को कब्जे में लेकर सत्ता प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। किन्तु भारतीय राजनीति एवं शासन के अध्येता छात्र, शोधार्थी, प्राध्यापक, चिन्तकों व विद्वानों के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि भारत की इस महान विभूति को राजनीतिकज्ञों के जाल से मुक्त कर उन्हें सम्पूर्ण भारत के नायक अथवा नेता के रूप में प्रतिष्ठापित करें।

आज 2016में डॉ॰ अम्बेडकर को जन्म लिए 125 वर्ष हो गए हैं और उनके निर्वाण को 64 वर्ष। उनके स्मरण की जरूरत क्यों पड़ रही है। उन्हें हम एक ऐतिहासिक पुरुष के रूप में देखना चाहते हैं अथवा दलितों के उद्धारक के रुप में दूसरे शब्दों में डॉ॰ अम्बेडकर के विचार हमारे आज के वर्तमान और कल के भविष्य को कैसा आकार दे सकते हैं तथा उनके विचारों को हम तटस्थता

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

से मूल्यांकन करना चाहते हैं या उन्हें 'दलितों के नेता' तक ही सीमित रखकर देखने वाले हैं। उनके व्यक्तित्व के मूल्यांकन के समय इस प्रकार के कई प्रश्न उठते हैं या उठाए जा सकते हैं।

संविधान निर्मात्री सभा के प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ॰ अम्बेडकर की प्रतिभा, ज्ञान, तर्कशक्ति और विचारों को देखकर तथा संविधान सभा में उनके भाषण सुनकर उनके प्रति सारा सन्देह समाप्त हो चुका था। उस वक्त की सभी जातियों और धर्मों के व्यक्तियों ने निर्विवाद रूप से उन्हें राष्ट्रनिष्ठा, मनुष्य के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उनकी मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों और सवर्णों ने उन्हें एक जाति तक सीमित करने का प्रयत्न किया। बाइबल में एक सुन्दर वाक्य आता है– "मनुष्य जब ईश्वर बनने की कोशिश करने लगा तब ईश्वर ने पृथ्वी पर अनुयायियों को भिजवा दिया।"स्पष्ट है कि बाबा साहब के विचारों और स्वपनों को प्रत्यक्ष में लाने के बजाय उनके कुछ अनुयायी उनके नाम की पूंजी बनाकर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ण करने में लग गए।

इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में एक और तेजस्वी, प्रतिभा संपन्न, विद्रोही व्यक्ति का जन्म हुआ, जिसने शास्त्र ग्रंथों को नकारा, व्यवस्था में आमूल–चल परिवर्तन की मांग की, स्त्रियों और दलितों के लिए विद्यालय खोले। ज्योतिबा फुले के नाम से महाराष्ट्र में परिचित इस व्यक्ति ने महाराष्ट्र की सीमा में अपने क्रान्तिकारी कार्य का आरम्भ किया। इन्हीं से प्रेरणा लेकर कोल्हापुर के छत्रपति साहू जी महाराज के प्रशासन में नकारे गए इस वर्ग को पूरे सम्मान के साथ स्थान दिया गया। समाज व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन की इस प्रक्रिया को और गति के साथ डॉ॰ अम्बेडकर ने आगे बढ़ाया।

भारतीय संविधान में दलितों को आरक्षण और संरक्षण देने के मूल में उनकी यह नीति थी कि अगले कुछ वर्षों में समाज समता की स्थिति में आ जाएगा। शिक्षा की सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण समाज के सभी वर्गों में अधिक सामंजस्य स्थापित होगा। इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वातंत्रयोत्तर काल में देश के सभी हिस्सों से दलित, शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे हैं। जितनी तेजी से उनमें शिक्षा का प्रचार–प्रसार होना चाहिए था वो नहीं हो पाया है, पर यह स्थिति सभी के संदर्भ में है। चुनाव की प्रक्रिया के कारण इस वर्ग की आंकक्षाओं को नकारकर आगे बढ़ना अब किसी को संभव नहीं है। एक ओर संसद और विधानसभाएं हैं, जो दलितों के हित और कल्याणा की योजनाएँ बना रही हैं तो दूसरी ओर सवर्णों से भरा हुआ प्रशासन है, जो पूरी ईमानदारी से इस वर्ग तक योजनाएँ नहीं जाने देता। तीसरी ओर एक वृहद समाज है, जिसकी मानसिकता से वर्ग और जाति के संस्कार अभी भी समाप्त नहीं हुए हैं। डॉ॰ अम्बेडकर ने संवैधानिक सुरक्षा तो दी परन्तु सवाल उनके कार्यान्वयन का है। आज शासक मतों के कारण दलित व्यक्ति को नकार नहीं सकते। उनकी आकांक्षाओं को मूर्त रूप देने के लिए वे योजनाएँ बनाते हैं।

जिस संविधान को पूरी निष्ठा और परिश्रम के साथ उन्होंने बनाया था, उसमें बार–बार संशोधन किए जा रहे हैं। यह सही है कि हिन्दू कोड बिल` अनेक प्रावधान जो डॉ॰ अम्बेडकर के समय स्वीकृत नहीं हो सके थे वे बाद में स्वीकृत हुए। मजदूरों, श्रमिकों और दलितों की और अधिक संरक्षण के बाद के वर्षों में अनेक कानूनों द्वारा दिया गया। जहाँ तक संविधान का प्रश्न है, वह डॉ॰ अम्बेडकर के सपनों के ओर चला गया है। परन्तु दूसरी ओर दलितों पर होने वाले अत्याचारों की संख्या भी बढ़ रही है। एक विचित्र विसंगति स्पष्ट दिख रही है कि संविधान में हम

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

अधिक प्रगतिशील हैं। कानून बनाते समय हम समता, मैत्री और बन्धुभाव के मूल्यों को महत्व दे रहे हैं। परन्तु प्रत्यक्ष आचरण में प्रशासन में स्थितियां ठीक उल्टी है।

डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर के राजनीतिक एवं सामाजिक विचारों को भारतीय राजनीति पर प्रभाव आज भी स्पष्ट है। यह प्रभाव घट नहीं रहा है, निरन्तर बढ़ रहा है। इस अर्थ में कि शिक्षा के प्रचार प्रसार और सुविधाओं के कारण दलितों की आशा आकांक्षाएं बढ़ रही हैं। उन्हें मूर्त रूप देने हेतु व दबाव की राजनीति का उपयोग कर रहे हैं। उनका गुट नारा न हो, इसलिए उनके साथ समझौते किए जा रहे हैं।

समाज में मानसिकता को बदलने योग्य वातावरण तैयार करने में सरकार, सार्वजनिक संस्थाओं से लेकर पाठयक्रम तथा अन्य इकाईयां असफल रही हैं। वास्तव में इस दिशा में उन्होंने प्रयत्न ही नहीं किया। चुनावों में वर्ण और जातीय व्यवस्था को मिटाने की अपेक्षा उन्हें अधिक संगठित किया गया है। जाति और वर्ण के संगठन से जब व्यक्ति अधिक सुरक्षित महसूस करने लगता है जब उसके व्यक्तिगत स्वार्थ सहजता से पूर्ण होने लगते हैं, जाति तथा वर्ण के कारण उसे प्रतिष्ठा मिलने लगती है, तब जाति–वर्ण की ताकतें बढ़ने लगती हैं। इनमें वे अधिक संगठित और शक्ति संपन्न होते जाएंगे, जो आर्थिक प्रतिष्ठित और विकसित हैं। ऐसी जातियों अथवा ऐसे वर्ग उन जातियों या वर्गों को कभी भी संगठित नहीं होने देंगे, जिनके संगठन से इसके हित सम्बन्धों में खतरे पैदा होते हों। 'इस कारण एक ओर वे खुद का संगठन बढ़ाएगे और दूसरे को कमजोर करते जाएंगे। अशिक्षित अज्ञानी और अन्धश्रृद्धालु जनता का संगठन एक चुनौतीपूर्ण काम है। किसी गांधी या अम्बेडकर को ही यह संभव है। परिणामतः बाबा साहब के 'संगठन करो' की घोषणा प्रत्यक्ष रूप में अवतरित नहीं हो सकी।

संदर्भ सूची

1. कंवल भारती : दलित विमर्श की भूमिका, 2002, पृ॰– 60–65
2. उपरोक्तानुसारः पृ॰ – 78
3. डॉ॰ रणसुये / सूर्य नारायणः डॉ॰ बाबा साहेब अम्बेडकर 1998, पृ॰–127
4. पुखराज जैन : प्रमुख भारतीय राजनीतिक चिन्तक, 1999 पृ॰–5